अक्कितम अच्युतन नम्बूदिरी

उमेश कुमार सिंह चौहान

18 मार्च, 1926 को केरल के पालक्काड जिले के कुमरनल्लूर में जन्म। पिता का नाम अक्कितम वासुदेवन नम्बूदिरी। माता— चेक्कूर पार्वती अन्तर्जनम। प्रारम्भिक गुरु थे मावरे अच्युत वारियर। 8 से 12 वर्ष की आयु तक पिता व अन्य लोगों से ऋग्वेद, बाद में कोडक्काट्ट शंकुण्णी नम्बीशन से संस्कृत व ज्योतिष, 14 वर्ष की आयु में तृक्कंडियूर कलत्तिल उण्णीकृष्ण मेनन से अँग्रेज़ी, गणित आदि की शिक्षा ली। वी.टी. भट्टतिरिप्पाड से तमिल भी पढ़ी। कुमरनल्लूर गवर्मेंट हाई स्कूल की शिक्षा पूरी करके कालीकट के सामूदिरी कॉलेज में इंटरमीडिएट में प्रवेश तो लिया किन्तु पढ़ाई आगे न बढ़ सकी। बचपन से ही चित्रकला व संगीत में अत्यधिक रुचि रही है।

आठ वर्ष की आयु से ही कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया। इडश्शेरी, बालमणियम्मा, नालप्पाडन, कुट्टिकृष्ण मारार, वी.टी., एम.आर.बी. आदि के निरन्तर सान्निध्य व मार्गदर्शन ने अक्कितम के कवि-व्यक्तित्व का विकास किया।

1946 से 1949 तक वे 'उण्णीनम्बूदिरी' मासिक पत्रिका के प्रकाशक रहे। 'योगक्षेमम' साप्ताहिक तथा 'मंगलोदयम' मासिक पत्रिका के उप-सम्पादक भी रहे। जून 1956 से अप्रैल 1985 तक आकाशवाणी के कालीकट तथा त्रिश्शूर केन्द्रों पर कार्यरत रहे तथा 1985 में सम्पादक के पद से सेवानिवृत्त हुए। अन्य प्रमुख भूमिकाएँ निम्नवत रही हैं—

निदेशक— साहित्य प्रवर्तक सहकारी संघ, कोट्टयम (1973-1976)

उपाध्यक्ष— केरल साहित्य अकादमी (1974-1977)

उपाध्यक्ष— संस्कार भारती, आगरा (1986-1996)

अध्यक्ष— तपस्या कला साहित्य वेदी (1984-1999)

अध्यक्ष— वल्लत्तोल एजूकेशनल ट्रस्ट शुकपुरम (1989 से)

अध्यक्ष— इडश्शेरी स्मारक समिति, पोन्नानी (1985 से)

उपाध्यक्ष— चड्.ड.म्पुषा स्मारक समिति, कोचीन (1986-1996)

अध्यक्ष— वेदिका ट्रस्ट (सामवेद अध्ययन केन्द्र), पांज्याल (1995 से)

अध्यक्ष— विल्वमंगलम स्मारक ट्रस्ट, तवनूर (2000 से)

योगक्षेम सभा, त्रिश्शूर के सदस्य के रूप में नम्बूदिरी समाज के सुधार के लिए सतत प्रयत्नशील रहे हैं। इस बारे में उन पर महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चल रहे सशक्त राष्ट्रीय आन्दोलन का काफी प्रभाव पड़ा था। 1946 से 1949 तक अक्कितम योगक्षेम सभा के प्रमुख नेता रहे। वी.टी. भट्टतिरिप्पाड, ई.एम.एस. नम्बूदिरीप्पाड, ओ.एम.सी. आदि के निजी सचिव रहे। 1950 से 1952 तक पोन्नानी केन्द्र कला समिति के सचिव तथा 1953 से 1954 तक अध्यक्ष भी रहे। इडश्शेरी, वी.टी., नालप्पाडन,

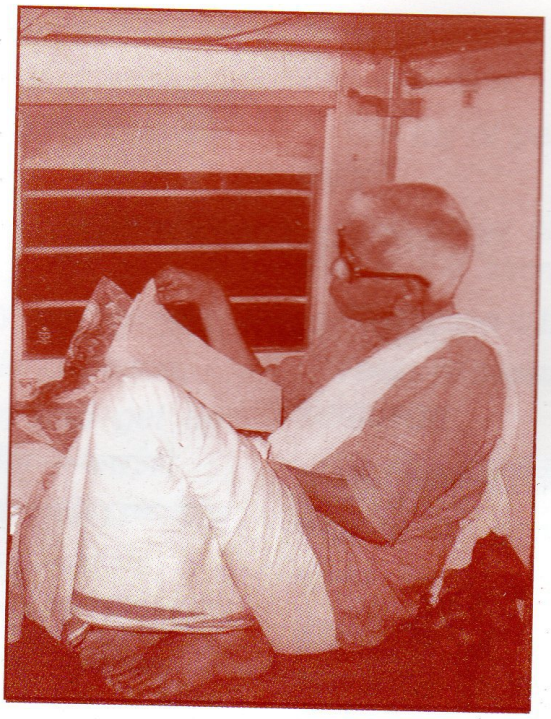

वी.एम. नायर, बालमणियम्मा, एन.वी. कृष्ण वारियर, सी.जे. थामस, एम. गोविन्दन, चिरक्कल टी. बालकृष्णन नायर, एस.के. पोट्टेक्काट्ट आदि का इस कला समिति से गहरा सम्बन्ध था। पोन्नानी केन्द्र कला समिति ही कालान्तर में केरल के नाटक-जगत के विकास में मुख्य भूमिका निभाने वाली मलबार केन्द्र कला समिति के रूप में विकसित हुई।

अक्कितम ने त्रिश्शूर, तिरून्नावाय, कडवल्लूर आदि स्थानों के सुप्रसिद्ध वेदाध्ययन केन्द्रों से जुड़कर वेद-विद्या के प्रचार का प्रयत्न किया। 1974 से 1978 के बीच पांज्याल, त्रिवेन्द्रम व कुंडूर में आयोजित यज्ञों की सफलता के लिए उन्होंने कठिन प्रयत्न किये।

अक्कितम ने वैदिक परम्परा के उदात्त सिद्धान्तों को अन्तर्निहित करके रूढ़िवादिता-विरोधी आधुनिक दृष्टिकोण को समाविष्ट कर ग़ैर-ब्राह्मणों के बीच भी वेद-विज्ञान के प्रचार के लिए भरपूर आवाज़ उठायी। आख़िरकार इसमें उन्हें सफलता भी मिली। उनके शान्त व गम्भीर उनके व्यक्तित्व के तेज के समक्ष यथास्थितिवाद जैसे भाप बनकर उड़ गया तथा वेदाध्ययन के बारे में उनके उदार व व्यापक दृष्टिकोण का सब जगह समादर हुआ। मनुष्य को मनुष्य से दूर करने वाला यथास्थितिवाद अक्कितम से निरन्तर भयभीत रहा है। अक्कितम ने अस्पर्श्यता के विरुद्ध 1947 में हुए पालियम सत्याग्रह में भी भाग लिया।

मलयालम कविता में आधुनिकता का प्रवेश अक्कितम की 1952 में प्रकाशित 'इरूपदाम नूट्टांडिंडे इतिहासम्' (बीसवीं सदी का इतिहास) नामक खंड-काव्य से ही हुआ। आलोचकों ने इसे टी.एस. इलियट की 'वेस्ट लैंड' के समतुल्य स्थान दिया। उस समय से लेकर आज तक सम्पूर्ण केरल में यह काव्य-कृति प्रगाढ़ आस्वादन व तीखे विमर्श का विषय बनी रही है। आज 55 वर्ष बाद भी आलोचकों के बीच इस कविता की चर्चा अवश्य होती है। मानवीय प्रेम पर आधारित सामाजिक जीवन-दर्शन के उदात्त भावों को इसमें सरल व अगाध इतिहास के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। प्रेम से विहीन होने तथा इसी वजह से अनैतिक बन जाने वाली क्रान्ति कभी विजयी नहीं होती, इस दूरदर्शिता को पहली बार प्रतिपादित करने वाली कृति थी यह। समानान्तर विचारों को प्रतिपादित करने वाली 'द गाड दैट फेल्ड', 'डॉ. जिवागो', 'मिड डे डार्कनेस' जैसी

विदेशी भाषाओं की कृतियाँ 1950 के दशक में व 1960 के दशक के प्रारम्भ में भारत आयीं। अक्कितम की 'इतिहासम' इसके पहले ही 1951 में रची गयी तथा 30 अगस्त 1952 को 'मातृभूमि' साप्ताहिक पत्रिका में छपी।

कविता, नाटक, अनुवाद, लघुकथा, उपन्यास आदि विभिन्न विधाओं में अक्कितम की 46 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। 1978 से 1982 के बीच भारत सरकार की सीनियर फेलोशिप के अन्तर्गत अक्कितम ने महात्मा गाँधी के जीवन व उनके लेखन के बारे में शोध कार्य करके 'धर्मसूर्यन' (1999) नाम खंड-काव्य लिखा।

श्रीमद्भागवत का मलयालम अनुवाद (2002) अक्कितम की चिरन्तन काव्य-साधना का फल है। उनकी अन्य काव्य-कृतियाँ हैं— 'वीरवादम', 'वलक्किलुक्कम', 'मन:साक्षीयुडे पूक्कल', 'मधुविधु', 'मधुविधुविन्नुशेषम', 'अंचु नाडोडिपाट्टुकल', ' करतलामलकम', 'अरङ्डे.ट्टम', 'मनोरथम', 'अनश्वरंडे गानम', 'इडिञ्ञुपोलिञ्ञा लोकम', 'वेण्णक्कल्लिंडे कथा', 'संचारिकल', 'कडम्बिंपूक्कल', 'ओरू कुडन्ना निलाव', 'मानसपूजा', 'निमिषक्षेत्रम', 'अमृतघटिका', 'आलञ्ञट्टम्मा', 'स्पर्शमणिकल', कलिक्कोट्टिलिल', 'ओरू कुला मुन्तिरिङ्. ञ', 'उण्णीकिनावुकल', 'समन्वयत्तियंडे आकाशम्', 'पंचवर्णकिलिकल', 'श्लोकपुण्यम', 'अक्कितत्तिंडे कुट्टिकविताकल', 'अन्तिमहाकालम' (सभी काव्य-संग्रह), 'इरूपदाम नूट्टाण्डिंडे इतिहासम', 'बलिदर्शनम', 'कुदिर्नामण्ण', 'देशसेविका', 'धर्मसूर्यन' (सभी खंड-काव्य), 'ई येडत्री नोणे परयू' (नाटक), 'अवतालङ्. ङ्. ल', 'काक्कपुल्लिकल' (दोनों लघु कथा-संग्रह), 'उपनयनम', 'समावर्तनम', 'हृदयत्तिलेक्कु नोक्कि एषुदू', 'पोन्नानिक्कलरी', 'श्रौतशास्त्रपारम्पर्यम केरलत्तिल', 'संचारिभावम' (लेख-संग्रह), 'सागर संगीतम' (कविता-अनुवाद), 'सनातनधर्मम तन्ने देशीयता' (श्री अरविन्द के भाषण का अनुवाद), 'नाडोडी', 'तेलुंगुकथकल' (अनुवाद), 'श्रीमहाभागवतम' (कविता-अनुवाद)।

अक्कितम को मिले विभिन्न पुरस्कारों में केरल साहित्य अकादमी सम्मान (1972), केन्द्र साहित्य अकादमी सम्मान (1973), ओडक्कुडषल सम्मान (1973), राइटर्स कोऑपरेटिव सोसायटी सम्मान (1975), उल्लूर सम्मान (1994), आशान पुरस्कार (1994), ललिताम्बिका अन्तर्जनम सम्मान (1996), वल्लत्तोल सम्मान (1996), कृष्णगीति पुरस्कार (1997), सम्पूर्ण साहित्य योगदान के लिए केरल साहित्य अकादमी सम्मान (1998), बालगोकुलम कृष्णाष्टमी सम्मान (2000), देवी प्रसादम सम्मान (2001), संजयन पुरस्कार (2003), पद्मप्रभा पुरस्कार (2003), नारायण पिषारड़ी पुरस्कार (2004), अमृतकीर्ति पुरस्कार (2004), अबुधाबी मलयाला समाज पुरस्कार (2006), पन्तलम पुरस्कार (2006), पूतानम पुरस्कार (2006), मध्यप्रदेश सरकार का कबीर सम्मान (2006), केरल सरकार का एषुत्तच्छन पुरस्कार (2008) आदि सम्मिलित हैं।

अक्कितम ने यू.एस.ए. कनाड़ा, यू.के., फ्रांस आदि अनेक देशों में साहित्य- कार्यक्रमों में हिस्सा लिया है। फ्रेंच रेडियो द्वारा भी उनका साक्षात्कार प्रसारित किया गया। उनकी अनेक कविताओं का अनुवाद फ्रेंच भाषा की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुका है। यह अनुवाद जाक जूवे, डामिनिक बुसे, गीता कृष्णामूर्ती आदि के द्वारा किए गये हैं। 'इरूपदाम नूट्टाण्डिंडे इतिहासम' का ई.एम.जे. वेण्णियूर ने अँग्रेज़ी, गोपाल जैन ने हिन्दी तथा एल.आर. स्वामी ने तेलुगु में अनुवाद प्रकाशित किया है।

वर्ष 1949 में 23 वर्ष की आयु में अक्कितम का विवाह हुआ। पत्नी का नाम है श्रीदेवी अन्तर्जनम। पार्वती, इन्दिरा, वासुदेवन, श्रीजा, लीला व नारायणन आदि उनके 6 पुत्र-पुत्रियाँ हैं। वर्तमान में वे सपरिवार केरल के पालक्काड जिले के कुमरनल्लूर गाँव में रहते हैं।